

Chapter 1 ईदगाह | class 11th hindi | revision notes antra

सारांश

मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी 'ईदगाह' में ईद जैसे महत्वपूर्ण त्योहार को आधार बनाकर ग्रामीण मुस्लिम जीवन का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया गया है। हामिद का चरित्र हमें बताता है कि अभाव उम्र से पहले बच्चों में कैसे बड़ों जैसी समझदारी पैदा कर देता है। मेले में हामिद अपनी हर इच्छा पर संयम रखने में विजयी होता है। चित्रात्मक भाषा की दृष्टि से भी यह कहानी अनूठी है।

गाँव में पूरे तीस रोजों के रमजान के बाद ईद के त्योहार की खुशियाँ मनाई जा रही है। सभी अपने कामों को जल्द-से-जल्द निपटाकर ईदगाह जाने के लिए तैयार हो रहे हैं। उनमें सबसे अधिक खुश बच्चे हैं क्योंकि उन्होंने इस दिन का बहुत इंतजार किया है। उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं है कि उनके अब्बा चौधरी के घर क्यों दौड़े जा रहे हैं। उन्हें तो बस ईदगाह जाने की जल्दी है क्योंकि वहाँ लगे मेले में घूमना है। हामिद भी चार-पाँच साल का एक दुबला-पतला लड़का है। वह अपनी दादी के साथ अकेले रहता है क्योंकि बचपन में ही उसके माता-पिता गुजर चुके थे। लेकिन उसे लगता है कि उसके अब्बाजान एक दिन जरूर आएँगे और बहुत सारी नई चीजें लाएँगे। उसकी दादी अमीना घर की आर्थिक स्थिति अच्छी तरह जानती है और उसे इस बात की चिंता है कि इतने कम पैसे में ईद का त्योहार कैसे मनाएगी। वह हामिद को तीन पैसे देकर मेले में भेजती है।

सभी ईदगाह पहुँचते हैं और ईद की नमाज पढ़ने के बाद आपस में गले मिलते हैं। बच्चों की टोली मेले से तरह-तरह के खिलौने और मिठाई खरीदती है। लेकिन हामिद के पास मात्र तीन ही पैसे हैं जिनसे वह अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है। इस बात पर उसके सभी दोस्त उसकी हँसी उड़ाते हैं। हामिद उनके खिलौनों की निंदा करता है और अपने चिमटे को उनके खिलौनों से श्रेष्ठ बताता है। घर आने पर जब उसकी दादी अमीना उसके हाथों में चिमटा देखती है तो डाँटना शुरू कर देती है। जब हामिद ने चिमटा लाने का असली कारण तबे पर रोटी सेंकते समय उनकी उँगलियों का जलना बताया तो दादी का सारा गुस्सा स्नेह में बदल गया। हामिद का अपने प्रति प्यार और त्याग की भावना देखकर दादी भावुक हो उठीं। उनके आँखों से आँसू गिरने लगे और वह हामिद को हाथ उठाकर दुआएँ देने लगी।

कथाकार-परिचय

मुंशी प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में तथा उनकी मृत्यु 1936 में हुई। उनका जन्म वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था। उनका मूल नाम धनपतराय था। प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी में हुई। मैट्रिक के बाद वे अध्यापन करने लगे। बी.ए. तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद उन्होंने असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और पूरी तरह लेखन-कार्य के प्रति समर्पित हो गए।

प्रेमचंद के साहित्य में किसानों, दलितों, नारियों की वेदना और वर्ण-व्यवस्था की कुरीतियों का मार्मिक चित्रण किया है। वे साहित्य को स्वांतः सुखाय न मानकर सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम मानते थे। वे एक ऐसे साहित्यकार थे, जो समाज की वास्तविक स्थिति को पैनी दृष्टि से देखने की शक्ति रखते थे। उन्होंने समाज-सुधार और राष्ट्रीय-भावना से ओत-प्रोत अनेक उपन्यासों एवं कहानियों की रचना की। उनकी भाषा बहुत सजीव, मुहावरेदार और बोलचाल के निकट है।

प्रमुख रचनाएँ- उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- मानसरोवर (आठ भाग), गुप्त धन (दो भाग) (कहानी संग्रह); निर्मला, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान (उपन्यास); कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी (नाटक); विविध प्रसंग (तीन खंडों में, साहित्यिक और राजनीतिक निबंधों का संग्रह); कुछ विचार (साहित्यिक निबंध)| उन्होंने माधुरी, हंस, मर्यादा, जागरण आदि पत्रिकाओं का भी संपादन किया।

कठिन शब्दों के अर्थ

- बला- कष्ट, आपत्ति, बहुत कष्ट देनेवाली वस्तु
- बदहवास- घबराना, होश-हवाश ठीक न होना
- निगोड़ी- अभागी, निराश्रय, जिसका कोई न हो
- चितवन- किसी को और देखने का ढंग, दृष्टि, कटाक्ष
- वजू- नमाज से पहले यथाविधि हाथ-पाँव और मुँह धोना
- सिजदा- माथा टेकना, खुदा के आगे सिर झुकाना
- हिंडोला- झूला, पालना
- मशक- भेड़ या बकरी की खाल को सीकर बनाया हुआ थैला जिससे भिश्ती पानी ढोते हैं
- अचकन- लंबा कलीदार अंगरखा जिसमें पहले गरेबाँ से कमर-पट्टी तक अर्धचंद्राकार बंद लगते थे और अब सीधे बटन टँकते हैं
- नेमत- बहुत बढ़िया
- जब्त- सहन करना
- दामन- पल्लू, आँचल